ISSN (Online) 2582-9327

IJARSCMT

International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology

Impact Factor: 5.781

Volume 3, Issue 3, March 2022

हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श का मुद्दा

पूजा चौधरी

शास. ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

शोध संक्षेप: सामाजिक गतिशीलता के केंद्र में स्त्री की स्थिति को देखा-परखा जाता हैं | किसी भी समाज के उत्थान और पतन में स्त्रियों की दशा का आकलन किया जाता हैं| भारत में यह श्लोक "प्रसिद्ध हैं **यंत्र नार्यस्तु पुज्यन्तर मन्ते तत्र देवता:**" अर्थात जहां नारी की पूजा होती हैं, वहां ईश्वर का वास होता हैं, परन्तु सामाजिक,सांस्कृतिक, आर्थिक,राजनैतिक दृष्टि से विशलेषण करने पर स्थिति ठीक उलट दिखाई देती हैं | यद्यपि स्त्री-विमर्श की शुरुआत पश्चिमी देशों से हुई, परन्तु भारतीय साहित्य में सदैव स्त्री को केंद्र में रखकर विचार-विमर्श किया जाता रहा हैं | आदिकाल से लेकर आधुनिक कल तक चर्चा की निरन्तरता बनी हुई हैं | प्रस्तुत शोंध पत्र में हिंदी साहित्य पर विचार विमर्श किया गया हैं |

भूमिका: प्राचीन भारती सवा इमय से लेकर आज तक स्त्री विमर्श किसी-न-किसी रूप में विचारणीय रहा हैं | स्त्री-विमर्श के अंतर्गत स्त्री की पुरिबनावट, उसके जातीय संस्कार तथा जीवन से उसका सम्पर्क बिंदु सब कुछ आ जाता हैं | दुनिया का सबसे शक्तिशाली नियम आकर्षण का नियम हैं, जिसमें स्त्री-पुरुष एक-दुसरे से प्रभावित होकर एक साथ जीवन जीते हैं, तथा बन्धनों में बंधे रहते हैं, लेकिन मानसिक स्तर पर अनेक ऐसे प्रश्न एवं दुविधाएँ होती हैं जिनका हल ढूँढना संभव नहीं हो पाता | जहाँ तक साहित्य में नारी विमर्श की बात हैं, तो बीसवीं शताब्दी के उतरार्द्ध से हमारे देश में जो नारीवाद आन्दोलन आरंभ हुए उन आंदोलनों से भारतीय साहित्य काफी प्रभावित हुआ हैं| इसकी प्रष्ठभूमि के रूप में यूरोप और अमेरिका की जिस नारीवाद विचारधारा के प्रभाव के कारण ऐसा हुआ हैं, वह पाश्चात्य देंशों के यदि भारतीय इतिहास पर दृष्टिपात किया जाए जो वैदिक कल से लेकर आदिकाल,भक्तिकाल,रीतिकाल,आधुनिक कल में हिंदी साहित्य हो जाता हैं | वैदिक कल में महाराज मनु ने स्त्री को पुरुष के द्वारा रक्षित बनाकर कहा हैं :-

"पिता रक्षित कौमारे,भर्ता रक्षित यौवनेपुत्रश्च स्थविरेभावे न स्त्री स्वतंत्रामर्हती |"

अर्थात: स्त्री बचपन में पिता,युवावस्था में पति तथा बुढ़ापे में पुत्र द्वारा रक्षित होती हैं | आचार्य शंकराचार्य ने तो स्त्री को नरक का द्वार की कह डाला :-

"द्वारस्तिनरकस्य नारी"

ऐसे समय में कृष्ण भक्त बाई का पितृ सत्तात्मक समाज के विरुध्द जाकर अपनी निजता के अनुरूप जीवन-यापन करना बहुत आश्चर्य की बात थी, क्योकिं तुलसीदास जी ने स्त्रियों को पराधीन मानते हुए उन्हें पशुओं की तरह ताड़ने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी | शायद ही ऐसा कोमल धारणा स्त्रियों के प्रति किसी अन्य कवि की रही होंगी ? रीतिकाल में स्त्री को केवल भोग की ही वस्तु ही समझा जाता था |

रीतिकाल में कवियों ने नारी के उदगार वासनात्मक तो प्रकट किए ही हैं | साथ ही विभन्न जातियों की नायोकाओं का वर्गीकरण भी किया हैं | जिसके कारण साहित्य में पहली बार मध्य व् निम्न वर्ग की कामकाजी स्त्रियों को महत्त्व मिला हैं | मध्य युग में तो स्त्री के हांथो की कठपुतली बनकर रह गई थी | स्त्रियों को रीतिकाल में आदर नहीं मिला था | स्त्रियाँ सती प्रथा, बालविवाह,बहुपत्निप्रथा, पर्दाप्रथा, अशिक्षा, कन्या वध जैंसी कठिनाइयों से जूझती रहीं, लेकिन सामाजिक स्तर पर स्त्री के सुधार के प्रयास इस काल में ही होने लगे | 19 वीं शताब्दी में स्त्रियों की दयनीय स्थिति को ऊपर उठाने के लिए राजा राममोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर,स्वामी विवेकानंद,स्वामी दयानंद आदि के भरसक प्रयास किये | आधुनिक काल की बात करें तो स्त्री शिक्षित हैं | शिक्षित कामकाजी अधिकारों के प्रति सजग तथा आर्थिक रूप से स्वतंत्र हैं, परन्तु कहीं न कहीं वह मानसिक घुटन को अपने अन्दर महसूस करती हैं | पुरुष प्रधानसमाज ने कभी सोचा भी नहीं था की उसका अनुगमन करने वाली स्त्री एक दिन लाक्ला से जच लायगी,

ISSN (Online) 2582-9327

IJARSCMT

International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology

Impact Factor: 5.781

Volume 3, Issue 3, March 2022

नारीवादी नारे लगाए गीत था अन्तरिक्ष में जाएगी | पुरुष का परम्परागत मन स्त्री के अधिकारों को स्वीकार नहीं कर पाता | स्त्री कास जग हों उसे स्वीकार नहीं हैं | वह आज भी स्त्री में परम्परागत कल लक्ष्मी वाले स्वरूप को ही ढूंढता हैं |

नारी विमर्श को आधुनिक कल में कविता,उपन्यास एवं कहानी में व्यापक तौर पर देखा जा सकता हैं | आधुनिक कल के साहित्य में स्त्री विमर्श के माध्यम से स्त्री उत्थान की संरचना काफी कठोर संघर्ष की मांग करती हैं तथा अपने अन्दर एक प्रश्न करती हैं | द्विवेदी जी ने नारी के पक्ष का समर्थन करते हुए लिखा हैं |

"पति को देवतुल्य हममाने,बच्चों की दासी हैं |
सेवा सदा करे नहि सोचे भूखी हैं या प्यासी हैं ||
हे भगवान !हाय तिस पर भी उपेक्षा कैसी पाती हैं |
शेषतुल्य ताडन अधिकार हम बनाई जाती हैं ||

कवियों में नए क्षितिज के कुछ आभास मिलते हैं | डॉ.गोपाल शरण सिंह की 'मानवी' राम नरेश त्रिपाठी के 'मिलन' पथिक आदि काव्यों में इसका संकेत मिलता हैं | कुमारी 'मधु' के एक गीत की इन पंक्तियों में इस नवीन विचारधारा का समर्थ नारी की ओर से मिलता हैं |

"एक तुम्हारे ही परिचय की सीमा में बंधकर रहूँ, इतनी लघुता का वरदान न आज मुझे स्वीकार हैं | मेरे पैरों में जंजीर न बांधों तुम अपने अधिकार, विहंगी की उन्मुक्त गगन में उड़ने की अभिलाषा हैं |"

वास्तव में साहित्य और समाज दोनों में ही स्त्री की जीवन की समस्याओ को दर्शाया गया हैं | साहित्य में नारी की ममता तथा कर्तव्य निष्ठा एवं समर्पण को विभिन्न रूपों में, जिस प्रकार का स्त्री विमर्श पाश्चात्य साहित्य में 60 -70 के दशक में देखा जाता हैं, लगभग उसी से मिलता जुलता स्त्री विमर्श भारतीय साहित्य में मिलता भारत में 'सीतांतनीउपदेश' नामक पुस्तक "जिसे एक अज्ञात हिन्दू औरत ने 125 वर्ष पहले लिखा था उसे 1862ई.में धर्मवीर भारती ने सम्पादित किया था |"

इसमें स्त्री को पुरुष के विरुध्द नहीं खड़ा किया हैं, बल्कि पुरुष के सहयोग से स्वस्थ समाज का निर्माण करने के लिए प्रेरित किया गया हैं | महादेवी वर्मा द्वारा रचित 'श्रंखला की कडियाँ" जिसकी रचना सन 1914ई. में हुई थी | इसमें इन्होने स्पष्ट किया हैं की स्त्री को केवल रमणीय भार्या ही नहीं बल्कि उसके पत्नीत्व, मातृत्व का भी सम्मान करना चाहिए |

म्रणाल पांडे ने भी अपनी पुस्तको में ग्रामीण एवं शहरी, घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के दुःख दर्द को प्रभावशाली ढंग से रेखांकित तो किया ही हैं, साथ ही सम्यक दृष्टिकोण को विकसित भी किया हैं | सन 1975 ई. में क्षमा शर्मा ने 'स्त्री का समय' पुस्तक में कई महत्वपूर्ण मुद्दों को भी उठाया तथा कहा की घरेलू स्त्रियों को भी एक साप्ताहिक अवकाश अवश्य मिलना चाहिए |

हिंदी के आरम्भिक उपन्यासों का उदभव स्त्री-चेतना से ही हुआ हैं | हिंदी में उपन्यास की रचना का उदभव स्त्री शिक्षा के लिए ही हुआ हैं | 'देवरानी जेठानी की कहानी', 'वामा शिक्षक', भाग्यवती आदि के उपन्यासों में स्त्री चेतना ही मूलाधार हैं |

1960 के दशक में उषा प्रियवंदना द्वारा लिखे गए उपन्यास 'रुकोगी नहीं राधिका' के द्वारा नारी की नई पहचान को प्रस्तुत किया गया | उस दौर में इस उपन्यास की पात्र राधिका को समझने की लिए आम साहित्यकार को पाठक से अलग हटकर सोचना पड़ा | लोगों ने समाज में किसी भी एसी नारी की कल्पना नहीं की जो स्वयं अपने लिए जीवन साथी की तलाष करे | राजी सेठ का उपन्यास मैं तो जन्मा ही में भी उसकी नारी पात्र स्वयं को अचंभित मानती हैं की उसे शादी की करके अपना परिवार बसाना हैं, यही उसके जीवन का उद्देश्य हैं |

मंजुल भगत की 'अनारों निम्नवर्ग की मेहनत कक्ष महिला हैं, जो अपने मान-सम्मान के लिए कुछ भी कर गुजरने को तैयार रहती हैं | वह अपने मूल्यों से समझोतस करती नहीं दिखती हैं | मैत्रेयी पुष्पा की आत्मा कबूतरी कुछ इसी तरह की पात्र हैं, जो अपने जीवन में अपमान सहने के बाद भी समाज से टकराने का साहस करती हैं | उसकी जीवतंता के कारण नारीं चेतना जागृत होती दिखाई देती हैं | एक स्तर पर ही यह विमर्श हिंदी उपन्यासों में चित्रित स्त्री के जीवन पर केन्द्रित हैं, जो स्त्री की दशा में सुधार, स्त्री सबलिकरण,स्त्री मुक्ति तथा स्त्रीवाद के रूप में हैं, वही नारीवाद विमर्श की देन हैं | यह स्वीकार करने के बावजूद कहा जा सकता हैं की स्त्री विमर्श कभी जो

ISSN (Online) 2582-9327

IJARSCMT

International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology

Impact Factor: 5.781

Volume 3, Issue 3, March 2022

संसार के समस्त स्त्रियों द्वारा समस्त पुरुषों का विरोध करने वाली विचारधारा के रूप में सामने आया तो कभी यह स्त्री की उन्मुक्त सेक्स की वकालत वाले साहित्य के रूप में सामने आया हैं |

हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श

स्त्री-विमर्श हिंदी साहित्य का एक ज्वलन्त प्रश्न हैं जो देश की आधी जनसँख्या से सम्बंधित हैं |

"संसार,समाज,सारा जहा चीर ही नारी का सब हरें यों सोंचे, तुच्छ समझ के चाहे यही | न बने श्रीकृष्ण बने सब कौरव दुर्योधन | अज्ञात अबला समझ-समझ के, खेलवाड़ करें सारी स्रष्टि |

ऐ नारी,तुम क्या जानो ,
नारी किस पदार्थ का नाम हैं ||
इसमें क्या बस-बस करती,
इनका आंतरिक रूप क्या हैं ?
तुमने बस इतना जाना,
पुरुष मेरा ईश्वर खुदा हैं |
कर्तव्य सिखा सेवा,गुलामी
दमन की तू पुजारी हैं ||

स्त्रियों की वेदना ही स्त्री विमर्श की जन्मदात्री हैं | यह वेदना साहित्य की ही नहीं बल्कि पुरे समाज की स्त्रियों की वेदना हैं | जरूरत हैं समाज को बदलने की जो स्त्रियों की इस वेदना को समझ सके | यद्यपि साहित्य स्त्री विमर्श के माध्यम से स्त्री उत्थान काफी कठोर संघर्ष की मांग करता हैं, फिर भी हिंदी साहित्य कविता,कहानी,उपन्यास और आत्मकथा के माध्यम से स्त्री विमर्श को अंकन किया हैं, जिन्हें पढ़कर स्त्रियों की वेदना को समझा जाय तथा समाज में स्त्रियों को पुरुषों के समान भागीदारी दी जाए |

संदर्भ ग्रन्थ :-

[1]. नारी की दास्तान,मुन्ना पटेल, मुन्ना पब्लिकेशन्स 37/657 सागर बिल्डिंग आजाद नगर, नं.

[2]. वीरा देसाई रोंड अँधेरी वेस्ट मुंबई 53, सं.-अप्रैल 2004 2 मनुस्मृति 9/3 अध्याय 3, पृष्ट 479, मनोज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली सं.2003.

[3]. कल्याण, नारी अंक पृष्ट128, राधेश्याम खेमका,गीताप्रेस गोरखपुर सावन 2061.

[4]. रसज्ञ रंजन, महावीर प्रसाद द्विवेदी, पृष्ट 60 साहित्य रत्न भंडार, आगरा, सवंत 1920.

[5]. सम्मेलन, डॉ. रामानंद तिवारी, काव्य में नारी के रूप (लेख) पृष्ट 45, सं.- शक सम्वत आषाढ़ मॉस 1882.

[6]. सीमान्तनी उपदेश – (भूमिका), धर्मवीर भारती प्रष्ट 10 वाणी प्रकाशन, मेंघा बुक्स, नई दिल्ली, सं. 1998.

[7]. श्रंखला की कडियाँ, महादेव वर्मा, प्रष्ठ 21, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद सं. -2008.

[8]. समकालीन हिंदी पत्रकारिता में नारी सन्दर्भ, रमेशचंद्र त्रिपाठी, प्रष्ठ 24, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली -110002, सं. अप्रैल 2007.

[9]. बीसवीं शताब्दी के अंतिम दषक की कहानियों में नारी, डॉ बदन प्रष्ठ 52, विकास प्रकाशन, कानपूर सं. -2008.

[10]. हंस पत्रिका, राजेंद्र यादव प्रष्ठ 15, अक्षर प्रकाशन, प्रा.लि. नई दिल्ली -110002, मई -1999.

****